**ओ३म्**

**‘श्रेष्ठ एवं आदर्श महापुरुष ऋषि दयानन्द’**

**-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

ऋषि दयानन्द संसार के मनुष्यों व सभी ज्ञात महापुरुषों में सर्वश्रेष्ठ आदर्श महापुरुष हैं। इसके अनेक कारण एवं प्रमाण हैं जिनके आधार यह निष्कर्ष निकलता है। महाभारतकाल वर्तमान से लगभग 5,200 वर्ष पूर्व है। महाभारत काल के बाद ऐसे अनेक पुरुष व महापुरुष हुए जिनके बारे में देश व संसार के लोगों की अलग अलग राय है। एक व्यक्ति को कुछ लोग अपना महापुरुष मानते हैं तो दूसरे अनेक कारणों से उसके महापुरुष होने का खण्डन करते हैं। किसी ने एक मत का प्रचार किया तो दूसरे ने दूसरे व अन्य मतों का प्रचार किया। कोई भी मत संसार में सर्वमान्य नहीं है। वेदों के आधार पर यदि समीक्षा करें तो सभी मतों में कमियां व अज्ञान मिश्रित मान्यतायें पाई जाती हैं जिसका कारण मत पंथों के आचार्यों व उनके ग्रन्थों के प्रणेताओं का अल्पज्ञ व सीमित ज्ञान वाला वा अविद्यायुक्त होना है। हम यह भी जानते हैं कि यदि हम ज्ञानशून्य वा अपूर्ण ज्ञान वालें होंगे तो हमारे कर्म कभी भी पूर्ण फलदायक नहीं हो सकते। इसके लिए पूर्ण सत्य व यथार्थ ज्ञान की आवश्यक सभी मनुष्यों को अभीष्ट है। ऐसे **‘स्वतः प्रमाण’** ग्रन्थ संसार में केवल चार वेद ही हैं जो सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर से उत्पन्न हुए थे। वेदों की यह विशेषता है कि यह सभी सत्य विद्याओं की पुस्तकें हैं। इनकी कोई मान्यता व सिद्धान्त सृष्टिक्रम के विरुद्ध नहीं है। संसार में सभी प्रकार के ज्ञान विज्ञान का आधार भी यह वेद ही हैं। यह तथ्य है कि यदि संसार में वेद न होते तो अतीत और वर्तमान में ज्ञान व विज्ञान का विकास व विस्तार न हुआ होता।

 संसार में सबसे मूल्यवान वस्तु ज्ञान होती है। संसार में वेद ज्ञान के प्राचीनतम वा आदि ग्रन्थ हैं। आज से लगभग 1.96 अरब वर्ष पूर्व सृष्टि की रचना होकर मानव की उत्पत्ति हुई थी। तभी ईश्वर ने आदि चार ऋषियों को वेदों का ज्ञान दिया था। हमारे सभी ऋषि आध्यात्मिक मनुष्य थे जो मन, वचन व कर्म से पवित्र होने के साथ त्याग भाव से जीवन व्यतीत करते थे। उनके अन्दर स्वार्थ भाव, काम, क्रोध, लोभ, मोह, राग, द्वेष व परिग्रह आदि की भावना नहीं होती थी। सभी पूर्ण व विशुद्ध शाकाहारी होते थे। वह पशुओं से भी उसी प्रकार प्रेम करते थे जैसे कि मनुष्यों से। ऋषियों का स्थान राजा से भी ऊपर होता था और सभी राजा व राजपुरुष ऋषियों का सम्मान करते थे। दलगत राजनीति का अस्तित्व उन दिनों नहीं था। वेदानुसार ही राजा को शासन चलाना होता था। ऋषियों व प्रजाजनों का सारा समय या तो ईश्वर के ध्यान व चिन्तन में व्यतीत होता था या फिर देश व समाज के उत्थान वा कल्याण के कार्यों में। प्राचीन भारत ज्ञान विज्ञान सम्पन्न था। भौतिक सुख सुविधाओं को वह मनुष्य जीवन में सीमित महत्व देते थे। आजकल के विलासी लोगों की तरह उस समय के ऋषि व प्रजाजन नहीं थे। उसी परम्परा में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी भी हुए। उन्होंने भी 14 वर्ष की अवस्था से ज्ञान प्रति को अपने जीवन का लक्ष्य बनाया था। सांसारिक बन्धनों से मुक्त होने के लिए ही उन्होंने 21 वर्ष की अवस्था में गृह त्याग कर दिया था। वह सच्चे व सिद्ध योगी बने और सन् 1863 में गुरु विरजानन्द सरस्वती के सान्निध्य में उनका वेदादि शास्त्रों व व्याकरण ग्रन्थों का अध्ययन पूरा हुआ। इससे पूर्व का उनका जीवन भी पूर्णतः त्याग भाव का जीवन था और बाद का जीवन भी त्याग भाव के साथ देश की उन्नति सहित मनुष्यों को अज्ञान से छुड़ाकर सत्य ज्ञान को प्राप्त कराने में ही व्यतीत हुआ। उन्होंने ही लोगों को ईश्वर के सच्चे स्वरूप से परिचित कराया। उनसे पूर्व यह ज्ञान वेदादि सत्य ग्रन्थों में सीमित व बन्द था। संस्कृत में होने से आम देशवासी इससे लाभ नहीं उठा सकते थे। स्वामी दयानन्द जी ने इसे पहली बार आम आदमी की बोलचाल की भाषा आर्यभाषा हिन्दी में प्रस्तुत कर संसार में एक बहुत बड़ी क्रान्ति की थी। जो ज्ञान हमारे बड़े-बड़े धर्माचार्यों को भी उपलब्ध नहीं था, वह महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश, पंचमहायज्ञविधि, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, वेदभाष्य, संस्कारविधि, आर्याभिविनय आदि ग्रन्थों के द्वारा जनसामान्य तक पहुंचाया जो इन्हें पढ़कर धर्म, ईश्वर, आत्मा व सृष्टि को यथार्थ रूप से जान सके।

 महर्षि दयानन्द श्रेष्ठ आदर्श पुरुष इस लिए थे कि उन्होंने जो भी कार्य किये वह प्रायः सभी अभूतपूर्व कार्य थे। उनके समय में स्त्रियों व शूद्रों को वेद पढ़ने का अधिकार नहीं था। उन्होंने वेदों का प्रमाण देकर स्त्रियों व शूद्रों को वेद पढ़ने का अधिकार दिलाया। यह भी महाभारतकाल के बाद की एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटना है। इस अभूतकार्य के कारण भी वह आदर्श पुरुष सिद्ध होते हैं। इससे भी अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि उनके समय में चारों वेद लुप्त प्रायः हो चुके थे। देश में उस समय तक पुस्तक व ग्रन्थ रूप में उनका प्रकाशन नही हुआ था। हस्तलिखित ग्रन्थ ही यत्र तत्र किंही के पास सुरक्षित रहे होंगे। स्वामी जी ने उन्हें ढूंढ कर प्राप्त किया। दुःख की बात है कि जिस व्यक्ति से सम्भवतः धौलपुर से उन्हें चार वेद मिले उसका ज्ञान भी हमें नहीं है। यदि उनके किसी शिष्य ने उनसे पूछ लिया होता तो आज हमें यह ज्ञात होता कि ऋषि दयानन्द को वेद उपलब्ध कराने वाले कौन महानुभाव थे। ऋषि दयानन्द की एक अन्य विशेषता यह थी कि वह वेदों के मर्मज्ञ व यथार्थ अर्थों को जानने वाले थे और उन्होंने इस ज्ञान को अपने तक सीमित न रखकर सर्वत्र प्रचार किया जिनसे ईसाई व मुस्लिमों सहित कोई भी व्यक्ति लाभान्वित हो सकता था वा हुए भी। महाभारत काल के बाद वेदों के सत्य अर्थ करने वाले विद्वान नहीं हुए, सायण व महीधर के जो भाष्य मिलते हैं उनके अनेक प्रकार से अनर्थ किया गया और वेदों के प्रामाणिक अर्थ न होकर लौकिक व यज्ञपरक अर्थ किये गये जिनसे वेदों का महत्व बढ़ने के स्थान पर घटा और जिसका लाभ अंग्रेजों ने भारत में ईसाईमत के प्रचार में किया। महर्षि दयानन्द ने वेदों के सत्य अर्थ करके उनकी योजना को विफल कर दिया था।

 स्वामी दयानन्द जी के कुछ ग्रन्थों का उल्लेख हम कर चुके हैं। स्वामी दयानन्द जी पहले व्यक्ति थे जिन्होंने नगर-नगर ग्राम-ग्राम घूम कर वेदों का प्रचार किया। स्वामी दयानन्द जी से पूर्व स्वामी शंकराचार्य जी हुए परन्तु उन्होंने वेदों पर न तो कोई ग्रन्थ ही लिखा और न वैसा प्रचार ही किया जैसा दयानन्द जी ने किया। हां, वह वैदिक धर्म व संस्कृति के अपने समय में बहुत बड़े रक्षक थे जिसके लिए यह देश उनका सदैव ऋणी है। स्वामी शंकराचार्य जी की कुछ मान्यतायें भी वेद व वैदिक परम्परा के विरुद्ध थी जिनमें से एक नारी जाति के प्रति उनके विचार थे। स्वामी दयानन्द जी ने अपनी दिव्य, ईश्वर प्रदत्त बौद्धिक व शारीरिक शक्ति का उपयोग कर आर्यजाति के पतन के कारणों पर भी विचार किया था। वह इस निष्कर्ष पर पहुंचे थे कि इसका कारण वेदों का अध्ययन व अध्यापन न होना था। इसके साथ अज्ञान व अन्धविश्वासों सहित मूर्तिपूजा, फलित ज्येतिष, मृतक श्राद्ध, जन्मना जातिवाद, यथार्थ वर्णव्यवस्था का अव्यवहार व अप्रचलन, बाल विवाह, वृद्ध विवाह, गुण, कर्म व स्वभाव पर आधारित स्वयंवर विवाह का न होना, ब्रह्मचर्य-नाश, विषयासक्ति, सती प्रथा, पुराणों का प्रचार व व्यवहार तथा प्रक्षिप्त मनुस्मृति के अनेक अविद्यायुक्त कथन आदि थे। इन सभी कारणों को दूर करने के लिए उन्होंने आन्दोलन किया जिसे उन्होंने वेद प्रचार का नाम दिया। देश की आजादी में भी प्रमुख भूमिका स्वामी दयानन्द जी की ही है। उन्होंने ही आजादी व स्वराज्य का मन्त्र दिया था। अंग्रेजों को उन्होंने यह कहकर ललकारा था कि यदि श्री कृष्ण जैसे वीर पुरुष होते तो अंग्रेज इस देश को छोड़कर भाग जाते। स्वामी दयानन्द ने देश व समाज को ईश्वर व जीवात्मा का सत्य स्वरूप बताया और उसकी उपासना की सरल व लाभकारी विधि बताई। यज्ञों के वैज्ञानिक पक्ष को सामने रखकर उन्होंने उसका प्रचार किया व उसे प्रत्येक गृहस्थी का दैनन्दिन कर्म घोषित किया। उन्होंने माता-पिता व आचार्य जनों की यथार्थ पूजा सहित देश भक्ति का स्वरूप भी अपने वचनों व ग्रन्थों के द्वारा प्रस्तुत किया है। शिक्षा पर उन्होंने सर्वाधिक बल दिया जिसका परिणाम यह हुआ कि एक षडयन्त्र के द्वारा उनकी अल्पायु में मृत्यु होने पर भी उनके शिष्यों स्वामी श्रद्धानन्द और पं. गुरुदत्त विद्यार्थी, महात्मा हंसराज और लाला लाजपत राय जी आदि ने गुरुकुल व दयानन्द वैदिक स्कूल के माध्यम से देशोत्थान का प्रशंसनीय कार्य किया।

 स्वामी दयानन्द जी ने देश व समाज उत्थान के इतने कार्य किये कि जिनकी चर्चा करते जायें तो वह शायद समाप्त ही न हो। भारत में आद्यौगिक क्रान्ति का स्वप्न भी उन्होंने ही सर्वप्रथम देखा था व उसके लिए उन्होंने प्रयास भी किए थे। गोहत्या के लिए उन्होंने जनान्दोलन करने के साथ हिन्दी रक्षा व उसके सरकारी कार्यों में प्रयोग को लेकर भी उन्होंने अपूर्व जनान्दोलन आदि कार्य किये। संस्कृत व गुजराती का विद्वान होते हुए भी उन्होंने हिन्दी सीखी और अपने सभी ग्रन्थों को हिन्दी में उपलब्ध कराया। उनके यह ऐसे कार्य हैं जिनसे वह विश्व के सर्वश्रेष्ठ आदर्श महापुरुष सिद्ध होते हैं। उन्होंने किसी भी बात में अपने व पराये का पक्षपात नहीं किया। संसार व प्राणी मात्र के हित के लिए उन्होंने अपना जीवन आहूत किया। आज भारत विश्व में अध्यात्म के क्षेत्र में एकमात्र देश है जिसका श्रेय ईश्वर की सत्य उपासना व जीवात्मा का सत्य स्वरूप प्रस्तुत करने के कारण उन्हीं को है। योग व प्राणायाम आदि को भी उन्होंने ही अपने ग्रन्थों के माध्यम से प्रचारित किया। सन्ध्या योग का ही पर्याय है। उनका अपना शरीर भी स्वस्थ, आकर्षक, सुन्दर व अद्वितीय था। यह सभी बातें उन्हें विश्व का सर्वोच्च महामानव सिद्ध करते हैं। इसी के साथ हम इस चर्चा को विराम देते हैं। ओ३म् शम्।

 **-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**

**ओ३म्**

**‘ऋक्सूक्ति रत्नाकर वैदिक साहित्य का एक प्रमुख महनीय ग्रन्थ’**

**-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

 वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है। वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है। यह वाक्य सभी ऋषि भक्तों व आर्यसमाज के सदस्यों के जिह्वाग्र पर विद्यमान रहता है। हम यदि चारों वेदों का अध्ययन करें तो इसके लिए कई महीनों का समय लग सकता है। इसका दूसरा सरल उपाय है कि हम किसी वेदज्ञ विद्वान् के वेदों पर प्रमुख मंत्रों का भाष्य पढ़ लें तो यह भी सम्पूर्ण रूप में न सही, किन्तु उस वेद का कुछ अंश हमें विदित हो सकता है। इससे भी सरल उपाय है कि किसी योग्य विद्वान का प्रत्येक वेद पर सरल, सुबोघ और प्रभावशाली सूक्ति संग्रह हमें प्राप्त हो जाये तो वेदों की भावनाओं को हम सरलता से आत्मसात् कर सकते हैं। सम्भवतः इसी दृष्टि से आर्यसमाज में अनेक विद्वानों ने वेदों व अन्य ग्रन्थों के सूक्ति संग्रहों का प्रकाशन किया है जिससे पाठक लाभान्वित होते हैं। पाठक को इन सूक्तियों के स्वाध्याय से तो लाभ होता ही है इसके अतिरिक्त भी इन प्रमुख सूक्तियों को स्मरण कर वार्तालाप व उपदेश आदि में भी इनका उपयोग कर इससे अपनी बात को प्रभावशाली रूप से प्रस्तुत किया जा सकता है। ऐसे अनेक लाभ वेदों के सूक्ति संग्रहों के होते हैं।

 आर्य साहित्य में सभी वेदों पर सूक्ति संग्रह उपलब्ध हैं। उसी श्रृंखला में **‘‘ऋक्सूक्ति रत्नाकर”** नाम से डा. विनोदचन्द्र विद्यालंकार जी का नवीनतम् सूक्ति संग्रह प्रकाशित हुआ है। इस सूक्ति संग्रह के प्रकाशक हैं आर्य साहित्य के प्रमुख प्रकाशक यशस्वी श्री प्रभाकरदेव आर्य व उनकी प्रकाशन संस्था **‘‘श्री घूडमल प्रहलादकुमार आर्य धर्मार्थ न्यास, हिण्डोन सिटी-322230’’।** पुस्तक में ऋग्वेद की तीन हजार से अधिक सूक्तियां विभिन्न शीर्षकों से दी गई हैं। यह पुस्तक अक्तूबर, 2016 में प्रकाशित की गई है। 262 पृष्ठीय इस पुस्तक का मूल्य रू. 120.00 है जिसकी छपाई व कागज उत्तम है एवं मुद्रण नयनाभिराम एवं सुरुचिपूर्ण है। हम इस महनीय पुस्तक के प्रकाशन के लिए इसके संकलयिता डा. विनोदचन्द्र विद्यालंकार जी व प्रकाशक श्री प्रभाकरदेव आर्य जी को बधाई देते हैं। हमने इस पुस्तक का पुरोवाक् एवं इसकी अनेक सूक्तियों को देखा है। इसका पारायण कर रहें हैं जो शीघ्र ही पूर्ण हो जायेगा। हमें लगता है कि प्रत्येक स्वाध्यायशील ऋषिभक्त को इसे प्राप्त कर इसका अध्ययन अवश्य करना चाहिये। यही लेखक व प्रकाशक के पुरुषार्थ का वास्तविक उद्देश्य होता है। ऐसा करके मनुष्य की आत्मा व बुद्धि को भोजन प्राप्त होने से दोनों शारीरिक प्रमुख अवयव स्वस्थ एवं ज्ञानादि गुणों से सम्पन्न व समृद्ध होते हैं।

 पुस्तक के आरम्भ में पुरोवाक् में सूक्तियों का महत्व बताते हुए ग्रन्थकार डा. विनोदचन्द्र विद्यालंकार जी लिखते हैं कि ये लघु, अतिलघु सूक्तियां मानवमात्र के जिह्वाग्र पर बनी रहती हैं, जिनका प्रयोग वक्ता एवं लेखक प्रसंगानुसार सामान्य वाणी व्यवहार से लेकर उच्च स्तरीय लेखों, व्याख्यानों, प्रवचनों, उपदेशों आदि में करते रहते हैं। यही कारण है कि इन सूक्तियों के छोटे-बड़े अनेक संकलन प्रकाशित किये गये हैं। **‘सुभाषित भण्डागार’** संस्कृत साहित्य का एक बृहत् प्रसिद्ध सुभाषित ग्रन्थ है। संस्कृत साहित्य में रामायण, महाभारत आदि महाकाव्यों तथा कालिदास आदि कवियों की काव्य-कृतियों से रोचक एवं शिक्षाप्रद सूक्तियों का संकलन कर उन्हें ग्रन्थ रूप में प्रकाशित करवाया गया है।

 लेखक महोदय आगे महत्वपूर्ण जानकारी देते हुए बतातें हैं कि इसी श्रृंखला में वैदिक साहित्य में भी भिन्न-भिन्न विद्वानों द्वारा चारों वेदों से ऐसी सूक्तियां संकलित कर सूक्ति-संग्रह के रूप में प्रकाशित की गई हैं, जो अत्यन्त रोचक, शिक्षाप्रद, नित्य प्रति के व्यवहार में आने वाली हैं। वेदज्ञ श्रीपाद दामोदर सातवलेकर ने अपने वेदभाष्यों के प्रारम्भ में प्रत्येक वेद की सूक्तियों का अर्थ सहित संकलन किया है। पद्मश्री डा. कपिलदेव द्विवेदी ने भी चारों वेदों के सुभाषित अलग-अलग पुस्तक के रूप में संकलित एवं प्रकाशित करवाये हैं। मेरे पूज्य पिता आचार्य रामनाथ जी वेदालंकार ने अथर्ववेद की 1000 सूक्यिों का अर्थ सहित संग्रह किया था, जो **‘वैदिक सूक्तियां’** नाम से गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्वालय द्वारा प्रकाशित किया गया था। उनका विचार था कि यदि पाठकों ने रुचि दिखाई तो भविष्य में अन्य वेदों की सूक्तियां का संकलन किया जा सकता है। पाठकों में **‘‘वैदिक सूक्तियां”** लोकप्रिय हुई और श्री घूडमल प्रहलादकुमार आर्य धर्मार्थ न्यास, हिण्डौन सिटी द्वारा इसके दो संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। पर इतर महत्वपूर्ण कृतियों के प्रणयन में व्यस्त हो जाने के कारण वे अन्य वेदों की सूक्तियों के संकलन के विचार को कार्यान्वित नहीं कर सके।

 किसी भी पुस्तक के विषय-क्रम का अपना महत्व होता है जिससे पुस्तक में क्या क्या लिखा व कहा गया है, विदित होता है। इस पुस्तक में कुल नौ अध्याय हैं। पहला अध्याय ‘प्रभु-चरणों में’, दूसरा ‘वेदोक्त विभिन्न नाम वाले ईश्वर का महिमा-गान’, तीसरा ‘मानवोचित गुणों की पुकार’, चतुर्थ अध्याय ‘गृहस्थ-जीवन के धर्म’, पांचवा ‘उन्नति के पथ पर’, छठा ‘शरीर की रक्षा’, सातवां ‘त्रैतवाद’, आठवा ‘माता भूमि पुत्रोऽहं पृथिव्याः’ तथा नौवां अध्याय ‘विविधा’ है। इन सभी अध्यायों में अनेक उपशीर्षकों से मंत्रों की सूक्तियां दी गई है। पहले अध्याय का एक उपाशीर्षक है ‘ईश्वर के उद्गार’। इसमें दी गईं 22 सूक्तियों में से हम प्रथम पांच सूक्तियां प्रस्तुत कर रहे हैं जिससे पाठक इसका आनन्द ले सकें। ‘अहं कविरुशना पश्यता मा’ (4/26/1) अर्थात् मैं कवि हूं, स्नेही हूं मेरा दर्शन करो। दूसरी सूक्ति ‘अहं भूमिमददामायीय’ (4/26/2) है जिसका अर्थ है ‘मैंने ही आर्य को भूमि प्रदान की है।’ तीसरी सूक्ति ‘अहं वृष्टिं दाशुषे मत्यीय’ (4/26/2) है जिसका अर्थ है ‘मैं दानी मनुष्य के ऊपर सुख की वर्षा करता हूं।’ चैथी सूक्ति है ‘मम देवासो अनु केतमायन्’ (4/26/2) जिसका अर्थ है ‘देव पुरुष मेरे ही निर्देश के अनुसार चलते हैं।’ पांचवी सूक्ति ‘नेन्द्रो अस्तीति नेम उ त्व आह’ (8/100/3) का अर्थ है ‘कई कहते हैं कि ईश्वर है ही नहीं।’ ऐसी ही 3 हजार से अधिक सूक्तियां पढ़कर पाठक ऋग्वेद से काफी कुछ परिचित हो सकते हैं।

 किसी भी पुस्तक की गुणवत्ता उसके लेखक के ज्ञान व परिश्रम पर निर्भर करती है। इस ग्रन्थ के लेखक प्रसिद्ध आर्य विद्वान डा. विनोदचन्द्र विद्यालंकार जी माता श्रीमती प्रकाशवती जी और पिता वैदिक विद्वान एवं सामवेदभाष्यकार डा. रामनाथ वेदालंकार जी के सुपुत्र हैं। आपका जन्म 4 जून सन् 1942 को उत्तर प्रदेश राज्य के बरेली जनपद के फरीदपुर में हुआ था। आप शिक्षा के क्षेत्र में विद्यालंकार, एम0ए0, पी-एच0डी0 (संस्कृत) हैं। आपने गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय पंतनगर के प्रकाशन निदेशालय में सह-सम्पादक, सम्पादक, सह-निदेशक तथा प्रबन्धक के रूप में लगाभग 33 वर्षों तक कार्य किया है। आपको अनुवाद, लेखन, सम्पादन आदि का विस्तृत ज्ञान व अनुभव है। आपने अनेक ग्रन्थ लिखे हैं। हमारी दृष्टि में सभी ग्रन्थ महत्वपूर्ण हैं परन्तु स्वामी श्रद्धानन्द: एक विलक्षण व्यक्तित्व, शतपथ के पथिक स्वामी समर्पणानन्द: एक बहुआयामी व्यक्तित्व (दो खण्ड), श्रुति-मन्थन, यजुः सूक्ति-रत्नाकर, अथर्ववेदीय चिकित्सा शास्त्र (स्वामी ब्रह्ममुनि कृत) आदि आपकी आर्यसमाज में बहुचर्चित एवं पढ़ी जाने वाली कृतियां हैं। अनेक आर्य व इतर संस्थाओं की स्मारिकाओं का सम्पादन भी आपने समय-समय पर किया है। अनेक संस्थाओं ने लेखन, सम्पादन एवं विद्वता के लिए आपका अभिनन्दन कर सम्मानित भी किया है। यह सूची बहुत विस्तृत है जिसे स्थानाभाव से हम यहां दे नहीं पा रहे हैं। सम्प्रति आप आर्य वानप्रस्थाश्रम, ज्वालापुर, हरिद्वार में निवास करते हैं एवं आर्य ग्रन्थों के लेखन व सम्पादन के कार्य में संलग्न हैं।

 डा. विनोदचन्द्र विद्यालंकार अहर्निश वैदिक साहित्य के लेखन व सम्पादन के प्रति समर्पित एक ऋषि भक्त एवं उच्च कोटि के वैदिक विद्वान हैं। हमें आशा है कि आपसे अनेक महत्वपूर्ण ग्रन्थ आर्यसमाज के विज्ञ पाठकों को प्राप्त होंगे। हम आपके स्वस्थ जीवन एवं दीर्घायु की कामना करते हैं। हम पाठकों से यह भी आशा करते हैं कि लेखक की कृति ऋक्सूक्ति रत्नाकर को पढ़कर पाठक उनका उत्साहवर्धन करेंगे। साथ ही पाठक वेद का पढ़ना-पढ़ाना रूपी परम धर्म का पालन कर पुण्य के भागी भी होंगे। इसी के साथ लेख को विराम देते हैं। ओ३म् शम्।

**-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

 **फोनः09412985121**